xSj&dk"B ou mRlkkn dk lrr~ mi;ksx

गैर-काष्ट वन उत्पाद (NTFP) का एक विविध एंव महत्वपूर्ण उत्पाद है । हिमाचल प्रदेश में सबसे प्रख्यात (NTFP) औषधीय पौधे है, जो अधिकतर प्रजातियां पारंपारिक आयुर्वेद चिकित्सा का आधार बनती हैं । ग्रामीण लोगों के निर्वाह एंव जीवन-यापन के लिए यंहा तक कि उच्च मूल्य और उच्च राजस्व प्राप्ति के लिए कई अन्य वन उत्पाद जैसे गुच्छी, नागछतरी, इत्यादि भी महत्तवपूर्ण मानी जाती है। इन (NTFP) का बाजार में काफी अच्छा दाम भी मिलता है। परिणाम स्वरुप, इनमें से कई उत्पादों / संसाधनों को निरंतर निकाला जा रहा है, जिससे आज उनका अस्तित्व संकट में है। बड़ी संख्या में प्रजातियों का दोहन, उपयोग और व्यापार को देखते हुए, गैर-काष्ठ वन उत्पाद प्रबंधन आज एक जैव-विवधता संरक्षण का मुद्दा भी बन गया है। गैर-काष्ठ वन उत्पादों की तेजी से बढ़ती मांग ने पुराने समय से चली आ रही सतत् एकत्र करने की प्रथा को तोड़ दिया है और इसके लालच में इन महत्तवपूर्ण संसाधनों को उनकी परिपक्वता से पूर्व ही जंगल से निकाल दिया गया है ।

प्राचीन परम्पराओं में गैर-काष्ठ वन उत्पादों मे महत्त्व और प्राचीन शास्त्रों में उनके उल्लेख के माध्यम से स्थिरता की महत्वपूर्ण परंपराओं को समाज मे शामिल किया गया है। आयुर्वेद ग्रंथो में कहा गया है कि औषधीय पौधों की शाखाओं और पतियों को बसंत मे और बरसात के मौसम में-जड़ों को गर्मियों के मौसम में या सर्दियों के अंत मे इकट्ठा किया जाना चाहिए, जब पतियां गिर गई हों या शरद ऋतू में पूरी तरह से परिपक्व छाल, कंद और लेटेक्स, शुरुआती सर्दियों और फल-फूल आने के समय पर एकत्रित करने के समय को श्रेष्ठ माना गया है।

इस पैम्फलेट में गैर-काष्ठ वन उत्पादों को एकत्रित करने के उचित समय के बारे एक चार्ट दिया गया है जोकि हिमालय पर राष्ट्रीय मिशन में चुने गए सभी ग्रामीणों के लिए एक समान है।













Prepared by Vaneet Jishtu, Lal Singh*, Pankaj Kumar and Rohit Sharma,

Funding

National Mission on Himalayan Studies.





भिधक जानकारी हेतु निम्न पते पर सम्पर्क करें:

निदेशक, हिमालयन वन अनुष्रधान ग्रंग्था कॉनिफर कैम्पस, पंथाघाटी, शिमला-171 013 (हि.प्र.) दूरभाष: 0177-2626778, फैक्स: 0177-2626779

This file is not copyrighted and may be used freely and/or modified.



Sustainable Harvest of **Non-Timber Forest Products**

(Balance Economic Benefits & Biodiversity Conservation)

Non-timber forest products, (NTFPs) include a great variety of products. In Himachal Pradesh, most prominent NTFPs are the medicinal plants; a large number of which form the basis for the traditional Ayurveda medicine. Many other forest products are important, for subsistence of the rural poor or even for high value and high revenue sale, such as the morels, cones and ferns, which fetches good price in the market. As a result, many of these resources are being harvested on a constant basis and some even over-harvested, making them threatened today. Given the large number of species harvested, utilized and traded, NTFP management today has also becomes a biodiversity conservation issue.

This fast increasing demand for NTFPs has broken the age old fabric of sustainable harvest from the wild and in their greed the resources are being removed much before their maturity.

The vital traditions of sustainability had been ingrained into societies through their emphasis in traditions and their mention in ancient scriptures. It is mentioned in Ayurveda texts that the branches and leaves of medicinal plants should be collected in spring and monsoon seasons; roots in summer or late winter when the leaves have shed or fully matured; barks, tubers and latex in autumn; heartwood in early winter and flowers and fruits according to their seasons.

This pamphlet contains inside a chart highlighting the appropriate time of collection of NTFPs, common to all the villages selected in the National Mission on Himalayan Studies across temprate Himachal Pradesh.

